सभी लोग भगवान को मंदिर, मस्जिद, चर्च में ढुंढते हैं लेकिन उन्हें भगवान कहीं भी नहीं मिलते। मानव सेवा ही भगवान की प्राप्ति है।
बेसहारा लोगों की सेवा कर भगवान को प्राप्त करें और इस धरती को स्वर्ग बनायें।

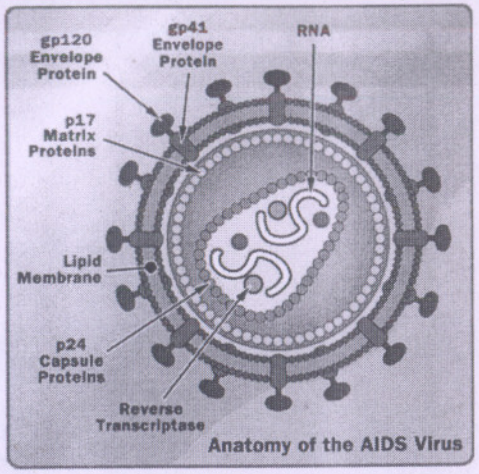

Anatomy of the AIDS Virus

एच0 आई0 वी0 /एड्स हुए रोगी के लिए क्या करना चाहिए?

1. HIV/AIDS जैसी बिमारी को दिमाग में न बैठने दें।
2. रोगी के साथ सामान्य लोगों की भाँति ही व्यवहार करें।
3. रोगी को योगाभ्यास, प्राणायाम के लिए प्रेरित करें और करायें।
4. खान-पान पर ध्यान रखें। पौष्टिक खाद्य पदार्थ दें।
5. रोगी को अपने रोग के बारे मे एहसास न होने दें।

सन् 1981 से अभी तक लगभग 25 मिलियन लोगों की पुरे विश्व में एड्स जैसी बिमारी से मौत हो चुकी हैं हिन्दुस्तान में एच0 आई0 वी0 /एड्स सन् 1986 में चिकित्सकीय विज्ञान की जाँच द्वारा पता चला। हिन्दुस्तान में लगभग 2.31 मिलियन लोग इस बिमारी से संक्रमित हैं जिसमें महिलाएँ लगभग 40%, बच्चे लगभग 3.5% तथा शेष पुरूष इस बिमारी से पीड़ित हैं। अभी तक लगभग चार लाख से ज्यादा लोगों की हिन्दुस्तान में इस बिमारी से मौत हो चुकी है।

HIV/AIDS का विस्तृत नाम है :-

Human Immunodeficiency Virus

Acquired Immune Deficiency Syndrome

"संयम, जानकारी, जागरूकता ही एच0 आई0 वी0 /एड्स का इलाज है।"

सेवा ही धर्म है!!!

नवजीवन फाउण्डेशन

नवजीवन फाउण्डेशन

गरीब, बेसहारा लोगों की सेवा ही भगवान की सेवा है।!!!

मुख्य कार्यालय :
252, नजर सिंह प्लेस, दूसरी मंजिल, प्लाट नं0 एस-11,
सन्त नगर, नई दिल्ली-110065
दूरभाष: 011-26238444, फैक्स: 011-66620550
मोबाईल नं0: 09313748678, 09213783579
ईमेल : info@navjivanfoundation.org
navjivanfoundation@gmail.com
बेवसाईट: www.navjivanfoundation.org
शाखा: नवजीवन फाउण्डेशन
533, बहादुरगंज (साहबगंज)
फैजाबाद-224001, उत्तर प्रदेश

"आप संस्था पर विश्वास करें, संस्था इसे साबित आपके सहयोग से करेगी।"

एड्स जागरूकता

आज के समय में सबसे ज्यादा खतरनाक बिमारी जो कि पुरे विश्व के लोगों के अन्दर डर पैदा कर रखा है। लगभग 33 मिलियन से ज्यादा लोग पुरे विश्व में इस बिमारी से पीड़ित हैं। जिस बिमारी का नाम सुन कर लोगों की रूह कांप जाती है। इस बिमारी को चिकित्सा विज्ञान में एड्स कहा जाता है। चिकित्सा विज्ञान द्वारा सन् 1980 में इस बिमारी के बारे में पता चला तथा चिकित्सा शोध द्वारा इस बिमारी की पुष्टि की गयी। चिकित्सकीय विज्ञान के अनुसार हर मनुष्य के शरीर को स्वस्थ रहने के लिए किसी भी रोगों से लड़ने की शक्ति (रोग प्रतिरोधक क्षमता) होती हैं जिसकी वजह से मनुष्य के शरीर पर बाहरी जीवाणु आक्रमण नहीं कर पाते हैं। लेकिन एच0 आई0 वी0 नामक जीवाणु अगर स्वस्थ शरीर में प्रवेश करते हैं तो वह सबसे पहले शरीर के रोग प्रतिरोधक सेल को खत्म कर देता है। जिससे शरीर में तरह-तरह की बिमारियाँ होती रहती है और बिमारी जल्दी ठीक नहीं होती है।

लक्षण :- किसी भी व्यक्ति को अगर एक ही बिमारी बार-बार हो रही है तथा इलाज के बाद भी ठीक नहीं हो रही है या ठीक होकर दोबारा बिमारी पकड़ लेती है। इस प्रकार के बिमारी के लक्षण एच0 आई0 वी0 के लक्षण होते हैं। इस बिमारी के पहले चरण को अंग्रेजी भाषा में ओपरट्यूनिस्टिक इन्फेक्शन Opportunistic Infection कहते हैं। यह बिमारी का पहला चरण होता है। जिसमें शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता धीरे-धीरे कम हो जाती हैं अगर इस प्रकार के लक्षण किसी भी व्यक्ति को दिखाई पड़ता है तो तुरन्त चिकित्सक परामर्श द्वारा एच0 आई0 वी0 जाँच करवायें।

एच0 आई0 वी0 / एड्स कैसे फैलता है?

1. असुरक्षित यौन सम्बन्ध द्वारा
2. यौन सम्बंध स्त्री या पुरूष द्वारा
3. एक संक्रमित शरीर से दूसरे शरीर में खून को प्रतिरोपित करने से
4. संक्रमित शरीर में प्रयोग की गयी सुई द्वारा
5. एड्स संक्रमित माँ से पैदा हुए बच्चे में संक्रमण

एच0 आई0 वी0 /एड्स कैसे नहीं फैलता है?

1. हाथ मिलाने से
2. चुमने से
3. एक ही पायखाने का प्रयोग करने से
4. एक ही साथ रहने, घुमने से
5. एक दूसरे के साथ खाने, पीने, सोने से
6. एक दूसरे के प्रयोग किये गये कप, गिलास, कपड़े, बिस्तर, साबुन से यह नहीं फैलता है।

एच0 आई0 वी0 /एड्स का निवारण:

1. एक से ही शारीरिक संबंध बनाना।
2. यौन सम्बन्ध के समय कण्डोम का प्रयोग करना।
3. जीवाणु मुक्त सुई का प्रयोग करना (डिस्पोजेबल सिरिन्ज)
4. बिना जाँच हुए खुन को न प्रतिरोपित करना या करवाना।
5. दाढ़ी बनाने का ब्लेड दूसरे को न प्रयोग करने देना।
6. **जागुरूकता फैलाना :-**

क) HIV/AIDS रोगी के साथ दुर्व्यवहार न करना।
ख) चिकित्सा की कोशिश करना।
ग) एड्स के बारे में लोगों को विस्तारपूर्वक बताना।
घ) वेश्यालयों में एड्स के बारे में बताना और उन्हें उनके स्वास्थ्य के बारे में सचेत करना।
ड.) बिना कण्डोम शारीरिक सम्बन्ध न बनाना/बनाने देना।

उपचार / इलाज

एड्स का पहला स्तर जिसको एच0 आई0 वी0 संक्रमण होता है इसका इलाज करके एड्स को रोका जा सकता है। जिसको चिकित्सा विज्ञान की भाषा में एंटीरिट्रोवरल ट्रीटमेंट (Antiretroviral treatment) कहा जाता है। अगर पहले स्तर पर संक्रमण का इलाज नहीं किया गया तो वह एड्स का रूप धारण कर लेता हैं एड्स हो जाने के बाद व्यक्ति का इलाज और बचाव असम्भव हो जाता है।